International Journal of History 2021; 3(2): 139-142

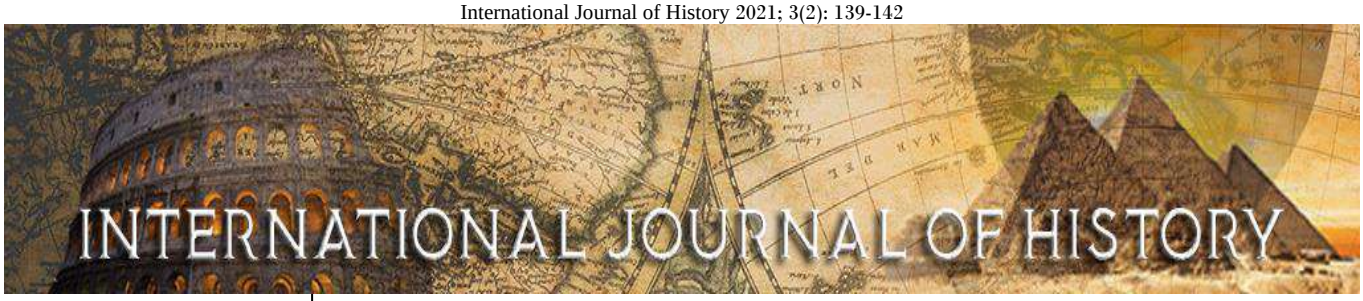


**E-ISSN:** 2706-9117
**P-ISSN:** 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2021; 3(2): 139-142
Received: 02-07-2021
Accepted: 08-08-2021

**ज्योति रानी**
पीएच.डी. शोधार्थी, इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

**Corresponding Author:**
**ज्योति रानी**
पीएच.डी. शोधार्थी, इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

# मध्यकाल में रामभक्ति की ऐतिहासिकता

## ज्योति रानी

**प्रस्तावना**

मध्यकालीन भारतीय इतिहास पर दृष्टि डाले तो यह ज्ञात होता है कि दरबारी इतिवृत्तों के माध्यम से शासकीय–व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, कला–स्थापत्य इत्यादि के बारे में अनुसंधान होते रहे हैं। परन्तु इतिहास को केंद्रीय धुरी से विपरीत क्षेत्रीय अथवा देशज भाषाओं में लिखे गऐ साहित्य अर्थात् वर्नाकुलर लिटरेचर को भी देखने और विश्लेषित करने की जरूरत है। यह बात तो सभी जानते हैं कि साहित्य और इतिहास को एक–दूसरे की आवश्यकता है क्योंकि ऐतिहासिक तथ्यों के अभाव में ही साहित्य ही इतिहास लिखने में हमारी मदद करता है। यहाँ प्रस्तुत शोध–पत्र में मैंने तुलसीदास कृत रामचरितमानस[1], जो कि अवधी भाषा (हिन्दी की ही एक शाखा है) में संवत् 1631–1633 विक्रम/1574–1576 ई.) में लिखा गया था, के हवाले से राम भक्ति को समझने का प्रयास किया है।

तुलसीदास के समकालीन शासक अकबर को अबुल फ़जल आदर्श शासक तथा धर्मनिरपेक्ष शासक के रूप में दर्शाते हैं जिन्होंने सभी धर्मों के मूल को एक साथ रखकर 'सुलह कुल' को अपनाया। यह संभव है कि अकबर का कुछ प्रभाव तुलसीदास पर भी रहा होगा। 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लिखी गई उनकी कृति का जब अध्ययन करते हैं तो यह पता चलता है कि तुलसीदास ने समकालीन दौर में धार्मिक विचारधारा को भक्ति के माध्यम से समय के अनुसार 'राम' के दिव्य गुणों को यूटोपिया का नाम दिया क्योंकि आदर्श शासक की भूमिका का निवर्हन करते हुए, रामराज्य को स्थापित करते हैं तथा इसी आदर्श शासन के कारण ही, रामभक्ति की विचारधारा जनमानस के बीच लोकप्रिय हुई।

यदि भक्ति–आंदोलन का इतिहास देखें तो हम पाते हैं कि निर्गुण धारा चलने लगी, सूफ़ीवाद आ चुका था, एकेश्वरवाद आ चुका था, प्रेम भक्ति आ गई। कहीं न कहीं इन सबका प्रभाव तुलसीदास पर था। यह तथ्य सर्वविदित है कि 'राम' शब्द अयोध्या 'नरेश', 'दशरथ' के ज्येष्ठ पुत्र के लिए तथा उनकी जीवन लीला का वर्णन करने वाले ग्रंथों में मिलता है, साथ ही यह 'राम' शब्द मध्ययुगीन भक्तिधारा की शाखा निर्गुण सन्तों[2]–जिनमें, नामदेव, कबीर, रविदास, गुरु नानक, दादू इत्यादि सन्तों की वाणी में प्रयुक्त हुआ है।

एक किवदंती के माध्यम से पता चलता है कि– तुलसीदास का अपनी पत्नी से प्रेम होना और राम के प्रति भक्ति न होना और रत्नावली द्वारा उनकी निन्दा करना ही तुलसीदास के राम की ओर मुड़ने का प्रमुख कारण था।[3]

संपूर्ण रामचरित मानस के केंद्र राम और उनकी भक्ति है, मैंने कुछ दोहों को समकालीन दौर के साथ समझने की कोशिश की है–

निर्गुण रूप सुलभ अति सुगम जान नहिं कोई।
सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होई।।

[निर्गुण रूप अत्यन्त सुलभ (सहज की समझ में आ जाने वाला) है, परन्तु (गुणातीय दिव्य) सगुण रूप को कोई नहीं जानता, इसलिए उन सगुण भगवान् के अनेक प्रकार के सुगम और अगम चरित्रों को सुनकर मुनियों के भी मन को भ्रम हो जाता है।][4]

तुलसीदास के अपने राम के प्रति धारणा एवं विश्वास सर्वथा भिन्न है, उनके राम दशरथ पुत्र राम ही है, उन्होंने राम को निर्गुण, निराकार प्रभु का साकार रूप माना है जो निर्गुण निराकार होते हुए भक्तों के कल्याण के लिए साकार रूप ग्रहण करते हैं अर्थात् तुलसीदास के राम निर्गुण–सगुण का समन्वित रूप है जो कि अनेक गुणों से युक्त है। यहाँ तुलसीदास दैवीय गुणों की बात करते है।

तुलसीदास निर्गुण की आलोचना नहीं करते, उसका खंडन नहीं करते अपितु वह तो कहते है–

सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा। गवाहि मुनि पुरान बुध बेदा।
अगुन अरुप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।
जो गुन रहित सगुन सोई कैसें। जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसै।

[सगुण और निर्गुण में कुछ भी भेद नहीं है– मुनि, पुराण, पण्डित और वेद सभी ऐसा कहते हैं। जो निर्गुण, अरूप (निराकार), अलख (अव्यक्त) और अजन्मा है, वहीं भक्तों के प्रेमवश सगुण हो जाता है। जो निर्गुण है वही सगुण कैसे है? जैसे जल और ओले में भेद नहीं (दोनों जल ही है; ऐसे ही निर्गुण और सगुण एक ही हैं। जिसका नाम भ्रमरूपी अंधकार को मिटाने के लिए सूर्य है, उसके लिये मोह का प्रसंग भी कैसे कहा जा सकता है?][5]

निर्गुण–सगुण[6] विषयक धारणा स्पष्ट रूप से हमारे सामने आती है तुलसीदास की इन पंक्तियों से यह बात समझ में आती है कि वस्तुतः तुलसी निर्गुण और सगुण में कोई अन्तर नहीं समझते थे, उनके अनुसार, निर्गुण ब्रह्म ही भक्त के प्रेमवश सगुण हो जाता है। तुलसी ने निर्गुण और सगुण रूप का समन्वय दिखाकर राम के प्रति अपनी भक्ति प्रकट की है।

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म स्वरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा।

[निगुर्ण और सगुण–ब्रह्म के दो स्वरूप हैं। ये दोनों ही अकथनीय, अथाह, अनादि और अनुपम है।][7]

तुलसीदास ने ब्रह्म को स्वभावतः निर्गुण माना है। उन्होंने दोनों ही धारणाओं का समन्वय किया है। नाम और रूप को उसकी उपाधि मानकर उसे अव्यक्त, अनाम इत्यादि कहकर उसकी साकारता का समर्थन किया है। लेकिन वे ब्रह्म के साकार रूप को ही पूर्ण कल्याणकारी और भजनीय मानते हैं।

तुलसीदास की यह दृढ़ धारणा है कि 'राम नाम' राम से भी बड़ा है अतः राम के वास्तविक स्वरूप की पहचान भी 'राम नाम' द्वारा ही होती है। इस संदर्भ में वह बताते हैं–

निरगुन ते एहि भाँति बड़ नाम प्रभउ अपार।
कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार।

[इस प्रकार निर्गुण से नाम का प्रभाव अत्यन्त बड़ा है। अब अपने विचार के अनुसार कहता हूँ कि नाम (सगुण) राम से भी बड़ा है।]''[8]

तुलसीदास ने शूद्र शबरी–राम–संवाद के माध्यम से नौ रूपी भक्ति अर्थात् नवधा भक्ति का उपदेश दिया हैं जिसमें भक्त सत्संगति पवित्रता, इत्यादि धर्मों का विशिष्ट महत्व प्रतिपादित किया गया है–

निर्गुण सन्त दादू के राम उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार हैः

माया रूपी राम कौं सब कोई ध्यावै
अलष आदि अनादि है सो दादू गावै।।

[अन्य सभी सन्तों के समान दादू भी राम को मानते थे मायारूपी राम या सगुण राम के उपासक वे नहीं थे। वे ऐसे राम को मान्यता देते है जो समस्त जगत में अद्भुत हुआ हो, एवं अनादि हो][9]

निर्गुण सन्त कबीर के राम इस प्रकार हैः

कबीर कहता जात है सुनता है सब कोई।
रांम कहें भला होइगा नातर भला न होई।।

[कबीरदास कहते हैं कि मैं निरन्तर प्रस्थापित करता आ रहा हूँ कि राम नाम जपने से ही कल्याण होगा, इस बात को सुनते सब हैं, किन्तु आचरण नहीं करते।][10]

नामदेव ने अपने ईश्वर को कई नामों से अभिहित किया है, जिनमें 'विट्ठल' और 'राम' प्रमुख हैं–

राम नांम षेती रांम नांम बारी हंमारै धन बाबा बनवारी।।
मंझा प्रांण तू बीठला पैडी अटकी हो बाबुला।।[11]

नामदेव के राम कबीर, दादू के समान ही निर्गुण, निराकार, अव्यक्त, अवगति, निरंजन, गुणातीत और सर्वव्यापी है, सभी जीव उनसे उद्भूत होत है, और सभी में उनका निवास होता है।

''तुलसीदास की भक्ति विचारधारा वैष्णव एवं ब्राह्मणीय तत्वों का सम्मिश्रिण थी।''[12] इसी प्रकार तुलसीदास सहित अन्य सगुण भक्ति से संबंधित चैतन्य, मीराबाई, सूरदास जो कि उच्च जातियों से थे उन्होंने व्यवस्था विरोधी समस्या का समाधान सामाजिक स्तर के अनुरूप न होकर वैयक्तिक भावना के स्तर पर ढूँढा।[13] जबकि निम्न शाखा से जुड़े लोग अर्थात् गैर ब्राह्मणीय सन्तों की संकल्पना स्वयं को योद्धाओं के रूप में पेश करती है।[14] इस प्रकार ''आज के राजनीति के परिप्रेक्ष्य में जिस रामभक्ति की दुहाई देकर जिस प्रकार की एकरूपता और सामाजिक–सांस्कृतिक समाकलन करने का प्रयत्न किया जा रहा है उसके विचार तत्व एवं उद्देश्यों का प्राचीन एवं मध्ययुगीन भक्ति परम्पराओं से कोई जामा नहीं है। राजनीतिक उद्देश्यों से चलाया गया आंदोलन भक्ति की समन्वयवादी प्रवृत्ति के स्थान पर असहिष्णु अलगाववाद को ही प्रश्रय दे रहा है।''[15]

उपरोक्त तुलसीदास द्वारा राम नाम की आवश्यकता उसके महत्व एवं समकालीन सन्तों के साथ चर्चा की गई है, जिसके पश्चात् यह ज्ञात होता है कि तुलसीदास के राम समकालीन सन्तों के राम से प्रभावित थे तभी तो उन्होंने निर्गुण राम को अपनी रामभक्ति में साकार ब्रह्म का स्वरूप देकर उसकी चर्चा की है।

16वीं शताब्दी से पूर्व राम के संबंध में ऐसी कोई धारणा नहीं मिलती है जिस प्रकार से तुलसी ने अपने ग्रंथ के माध्यम से व्यक्त की है; यद्यपि तुलसी से पूर्व वाल्मीकि रामायण अध्यात्म रामायण कम्बन रामायण इत्यादि रामायण लिखी जा चुकी है परंतु तुलसीदास ने राम के चरित्र को आदर्श चरित्र के रूप में अपनी रचना के माध्यम से पेश किया उन्होंने न केवल उत्तरी भारत की जनता को अत्यधिक प्रभावित किया अपितु प्राक् उपनिवेशीय एवं औपनिवेशिक काल में हिंदी लेखकों एवं प्राच्य विद्वानों को 'रामायण विषय' पर अध्ययन करने व टीका–टिप्पणी करने हेतु प्रेरित किया। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में राम साहित्य अथवा तुलसी साहित्य के गंभीर व व्यापक अध्ययन करने में फादर कामिल बुल्के का स्थान अग्रणीय है। बुल्के के कथानुसार रामायण की लोकप्रियता इतनी विकसित हुई कि जिसके लिए एक युग पर्याप्त नहीं था अपितु शताब्दियों तक इसकी प्रसिद्धि बनी रहेगी।[16] तुलसीदास के पूर्व का हिन्दी राम साहित्य अधिक विस्तृत नहीं है लेकिन सूरदास कृत *'सूरसागर'* में वाल्मीकि के क्रमानुसार रामकथा के मार्मिक स्थलों पर 150 पदों की रचना मिलती है तथा रामानंद के कुछ भक्ति विषयक पर सुरक्षित है। पृथ्वीराज के *'द्वितीय समय'* में दशावतार कथा के अन्तर्गत रामकथा के 100 छन्द मिलते हैं जिनमें लंकायुद्ध के विवरण को अधिक महत्व दिया गया है।[17] तुलसीदास के समकालीन कवियों में राम साहित्य की दृष्टि से अग्रदास और नाभादास प्रमुख हैं, इनकी रचनाओं से यह ज्ञात होता है, कि तुलसीदास के समय में राम की माधुर्य भक्ति का प्रचलन हुआ था। अग्रदास के अष्टयाम में राम की रास क्रीड़ा का वर्णन मिलता है। अग्रदास के शिष्य नाभादास ने भी राम–सीता चरित्र को लेकर अष्टयाम की रचना की है।[18] ब्राह्मण धर्म में राम को विष्णु का अवतार, बौद्ध धर्म में

बोधिसत्व, जैनधर्म में आठवें बलदेव के रूप में स्थान प्राप्त हुआ है।[19]

यद्यपि पोला रिचमैन की संपादित पुस्तक में वाल्मीकि रामायण पर आधारित रामकथा को प्रस्तुत किया गया है तथापि अधिकतर विद्वान वाल्मीकि रामायण से सहमति भी रखते हैं। पोला रिचमैन के अनुसार, वाल्मीकि रामायण विस्तृत रूप में राम के जीवन का सर्वप्रथम आचार–व्यवहारों का ऐसा प्रबंध काव्य है, जिसने विस्तृत रूप से भारत एवं दक्षिण पूर्व एशिया एवं उसके बाहर लोगों को प्रभावित किया है।[20]

ए.के. रामानुजन के शब्दों में ''जिन सांस्कृतिक क्षेत्रों में रामायणें जातीय स्तर पर विद्यमान हैं, वहाँ प्लॉटों, चरित्रों, नामों, भूगोल, घटनाओं और संबंधों को सम्मिलित रूप मिलता है। मौखिक, लिखित कार्य प्रदर्शन परंपराए, मुहावरे, कहावतें और यहाँ तक कि भ्रमोक्तियों भी रामकथा को इंगित करती है। इस अर्थ में कोई भी वाचन पुर्नवाचन नहीं, और कथा कहीं भी समाप्त नहीं होती भले ही पाठों के अन्तर्गत एसे समाप्त किया जाता हो।[21]

पोला रिचमैन के अनुसार, क्लिंटन सीली और ई.वी. रामासामी के लेख में रावण और उसके अनुयायियों (राक्षसों) को महिमामंडित किया गया है। केवल माइकेल मधु सुदन दत्त और रामासामी ने ही रावण को आदर्शरूप में चित्रित कर उसके महत्व को दर्शाया।[22] ई.वी. रामासामी ने दक्षिण भारत की पहचान अर्थात् तमिल भाषा के संदर्भ में रामायण पर टिप्पणी करते हुए रामकथा में 'रावण' को 'सच्चे हीरो' के रूप में चिन्हित किया है। रामासामी रामायण ग्रंथ को एक 'राजनीतिक प्रभाव' के रूप में पढ़ते हैं। यहाँ हम अन्य विद्वानों से विपरीत व्याख्या के रूप में रामासामी कि टिप्पणी को देख सकते हैं जिसमें उन्होंने दर्शाया कि किस प्रकार रामायण को द्रविड़ों को लामबंद करने के लिए प्रयोग किया गया है, राम द्रविड़ लोगों का शोषण कर स्वयं को प्रभावशाली शासक के रूप में द्रविड़ों पर स्थापित किया है, किन्तु 'रावण' एक ऐसे नायक के रूप में उभरा जिसने द्रविड़ों के लिए एक 'सत्य महान शासक' के रूप में सामने आकर राम का सामना किया।[23]

हालाँकि रामकथा का स्रोत इसकी विषयवस्तु की चिंतन श्रुति मूल्यों के रूप में महत्त्वपूर्ण है। श्रुति रूप में मानस की संकल्पना मौखिक[24] प्रस्तुति द्वारा होती है।[25] सांस्कृतिक दृष्टि से यह कथा प्रायः उत्तर भारत में सुनी जाती है। मानस के संदर्भ में सामान्य धारणा बनी हुई है कि मानस को वेदों के अनुरूप ही दैवीय मान्यता प्राप्त हुई है। बहुसंख्यक रामभक्तों को ऐसा विश्वास है कि वस्तुतः मानस ने पवित्रता एवं अधिकार दोनों ही रूप में वेद का स्थान ग्रहण कर लिया है। उनके लिए मानस केवल श्रुति नहीं अपितु स्वयं में श्रुति है। यह वर्तमान युग के लिए सर्वग्रंथ है जो कि श्रुति द्वारा नये स्तर से परिभाषित किया जाता है।[26]

रामकथा के विविध पाठान्तर एवं मौखिक वाचन के संदर्भ में विद्वानों की व्याख्याओं से जो जानकारी मिलती है। वह हमें तुलसीदास के रामचरितमानस की रामकथा एवं अन्य प्रचलित रामकथाओं को समझने में बहुत मदद करती है तथा यह भी स्पष्ट हो जाता है कि रामकथा न सिर्फ भारतीय क्षेत्रों में अपितु गैर भारतीय क्षेत्रों में भी समान रूप से विकसित हुई। तुलसीदास की रामकथा से भिन्न अन्य संस्कृति की रामकथा अपने स्थानीय क्षेत्रों में मौजूद घटकों की सामूहिक निधि होती है, जिसके प्रभाव से उस क्षेत्र की रामकथा अन्य क्षेत्रों से भिन्न हो जाती है। इस प्रकार यह कह सकते हैं कि– तुलसीदास ने मुग़ल दौर के सामाजिक और धार्मिक वातावरण में राम को केंद्र में रखकर भक्ति का ताना–बना बुना और निर्गुण–सगुण के समन्वय रूप को पेश किया। उन्होंने किसी संप्रदाय को न चलाकर केवल राम नाम का गुणगान कर राम की भक्ति की आवश्यकता पर बल दिया जिसे जनता अपने जीवन में अपना सकें। यह और बात है कि आने वाले समय में भक्ति की इस भावना को एक लोकप्रिय धार्मिक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया जिसका राजनीतिक इस्तेमाल भी संभव था।

## संदर्भ


1. तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, हनुमान प्रसाद पोद्दार द्वारा संपादित एवं हिन्दी में अनुवादित, सटीक मझला साइज, गीताप्रेस गोरखप्रेस, संवत् 2067 विक्रम। रामचरितमानस शब्द रामचरित (चरित्र) और मानस (सरोवर) शब्दों के योग से बना है। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ में रामचरितमानस 'राम के चरित्र का सरोवर' है जिसे हिन्दी साहित्य की महानतम रचनाओं में से एक माना जाता है। रामचरितमानस भारतीय संस्कृति में एक विशेष स्थान रखती है। उत्तर भारत में रामायण के रूप में कई लोगों द्वारा भक्तिभाव से इसका प्रतिदिन पठन–पाठन किया जाता है। रामचरितमानस में राम को भगवान विष्णु के अवतार के रूप में दर्शाया गया है।
2. अधिक जानकारी के लिए देंखे, चतुर्वेदी, परशुराम, उत्तर भारत की संत परंपरा, भारती भण्डार प्रयाग, भारत दर्पण ग्रंथमाला, ग्रंथ संख्या 6, प्रयाग, सं. 2008 वि. (1931ई.)।
3. ग्रियर्सन, जार्ज. ए, 'गोस्वामी तुलसीदास जीवन चरित', रामचन्द्र शुक्ल, भगवानदीन, ब्रजरत्नदास एवं अन्यों द्वारा संपादित, तुलसी ग्रंथावली (मूल्यांकन), भाग–3, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, संवत् 2033 विक्रम पृष्ठ 6.
4. तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, दोहा 73 ख, पृष्ठ 898.
5. उपरोक्त, बालकांड, सोरठा, 115–1/2, पृष्ठ 105
6. डेविड लारेन्जन ने अपने परिचायात्मक निबंध 'द हिस्टारिकल विसीसिटीट्यूडस ऑफ भक्ति रिलिजन' में मध्ययुगीन उत्तर भारत के भक्ति आंदोलन के भक्ति–विषयक दो मुख्य विचारधाराएँ–निर्गुण व सगुण से संबंधित सामाजिक विचारधाराओं के ऐतिहासिक विकास का विश्लेषण किया है। उन्होंने निर्गुण और सगुण में भक्ति परंपरा की भिन्नता को दिखाया है, डेविड लारेन्जन द्वारा संपादित, भक्ति रिलिजन इन नॉर्थ इंडिया, पृष्ठ 1–32; करीन शोमर एंड डब्ल्यू.एच. मैकलियोड द्वारा संपादित पुस्तक द सन्तसः स्टडीज़ इन ए डिवोशनल ट्रेडिशन ऑफ इंडिया, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1987, यह पुस्तक मध्यकालीन संतों पर महत्वपूर्ण एवं प्रसंगों सहित अध्ययन को प्रस्तुत करती है तथा उत्तर और पश्चिमी भारत के सन्त कवियों विशेष रूप से निम्न वर्ग से जुड़े हुए सन्तों के आध्यात्मिक विचारों, उनकी अभिवृत्ति के विकास पर प्रकाश डालती है साथ ही सन्तों की भक्ति–विषयक दो धाराएँ निर्गुण–सगुण तथा वैष्णव शब्द को परिभाषित किया गया है, पृष्ठ 1–17.
7. तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, बालकांड दोहा 22/1, पृष्ठ 27.
8. उपरोक्त, बालकाण्ड, दोहा–23, पृष्ठ 27
9. कैलेवर्ट, विन्नात. एम और बीक, बॉर्ट ऑप दे, निर्गुण भक्ति सागर : डिवोशनल हिन्दी लिटरेचर, दादू साखी मायौ कौ अंग : 12, पद 131, पृष्ठ 165.
10. उपरोक्त, सुमिरन भजन महिमा कौ अंग, साखी संख्या 7, पृष्ठ 283.
11. उपरोक्त, नामदेव के पद संख्या 2/4, पृष्ठ 389.
12. बहुगुणा, रामेश्वर प्रसाद, 'कानफिलक्ट एंड एस्सीमिलेशन इन मेडिवल नॉर्थ इंडियन भक्ति', ऐन अलटरनेटिव एप्रोच, सं. (यूजीसी) प्रोग्रेम, डिपार्टमेन्ट ऑफ हिस्ट्री एंड कल्चर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली, पृष्ठ 11
13. जायसवाल, सुवीरा, 'प्राचीन काल में भक्ति का स्वरूप : ऐतिहासिक परिदृश्य', अजय तिवारी द्वारा संपादित, तुलसीदास एक पुर्नमूल्यांकन, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), 2005, पृष्ठ 24

14. बहुगुणा, रामेश्वर प्रसाद, 'कानफिलक्ट एंड एस्सीमिलेशन इन मेडिवल नॉर्थ इंडियन भक्ति, ऐन अलटरनेटिव एप्प्रोच', पृष्ठ 11
15. जायसवाल, सुवीरा, 'प्राचीन काल में भक्ति का स्वरूपः ऐतिहासिक परिदृश्य', अजय तिवारी द्वारा संपादित, पृष्ठ 24
16. बुल्के, फादर कामिल, एक ईसाई की आस्था–रामकथा और हिन्दी, डॉ. दिनेशवर प्रसाद द्वारा संपादित, प्रकाश संस्थान, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ 62 ; विस्तृत जानकारी के लिए देखें– जायसवाल, सुवीरा, 'हिस्टारिकल एवोल्यूशन ऑफ रामा लेजेंड', सोशल साइंटिस्ट, वोल्यूम 21, न. 3/4 (मार्च–अप्रैल, 1993), पृष्ठ 89–97, इस लेख में परंपरा से चली आ रही राम कथा तथा इस कथा के नायक राम की ऐतिहासिकता का भी परीक्षण किया गया है।
17. बुल्के, फादर कामिल, रामकथा की उत्पत्ति और विकास, हिन्दी परिषद् प्रकाशन, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग, 1962, पृष्ठ 251
18. उपरोक्त, पृष्ठ 251.
19. उपरोक्त, पृष्ठ 722.
20. पोला रिचमैन द्वारा संपादित, मेनी रामायणाज़ द डाइवर्सिटी ऑफ ए नरेटिव ट्रेडिशन इन साउथ एशिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1992, पृष्ठ 5
21. रामानुजन, ए.के. 'थ्री हन्ड्रेड रामायणाज़ : फाइव एवजेम्पलस एंड थ्री थॉटस ऑन ट्रांसलेशन' ; पोला रिचमैन द्वारा संपादित, पृष्ठ 46
22. पोला रिचमैन द्वारा संपादित, 'मेनी रामायणाज़ः द डाइवर्सिटी ऑफ ए नरेटिव ट्रेडिशन इन साउथ एशिया', पृष्ठ 15.
23. रिचमैन, पोला, 'ई.वी. रामनामीज रीडिंग ऑफ द रामायणाज़', पोला रिचमैन द्वारा संपादित, पृष्ठ 175–201.
24. मौखिक साक्ष्य का एक अद्भुत उदाहरण मध्ययुग का मलफूज़ात साहित्य के रूप में मिलता है। यह सूफीवाद का साहित्यिक रूप था। सर्वप्रथम 14वीं सदी में शेख निज़ामुद्दीन औलिया के शब्दों को अमीर हसन सिज़्जी ने अपनी पुस्तक फवायद–उल–फुवाद में संकलित किया था। हालाँकि ये संकलन सुसंगठित तरीके से होता था। मलफूज़ परंपरा के अंतर्गत पीर एवं मुरीद के संबंधों की घनिष्ठता परिलक्षित होती है। इस परंपरा में पीर अपने मुरीदों को उपदेश देते जिन्हें सिज़्जी लिखते जाते। आज यह कृति मलफूज़ परंपरा को जानने का एक ऐतिहासिक स्रोत बन गई है, देहलवी, अमीर हसन अला सिज़्जी, फ़वायदुल फुवाद, ख्वाज़ा हसन निज़ामी द्वारा हिन्दी में अनुवादित, ख्वाजा हाल, बस्ती दरगाह हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, नई दिल्ली–2004.
25. उपरोक्त, पृष्ठ 238.
26. उपरोक्त, पृष्ठ 237. समकालीन समय में कभी–कभी मानस का उल्लेख 'हिन्दू वेद' और 'पाँचवे वेद' के रूप में किया गया हे। हिन्दू ब्रह्मड / अंतरिक्ष ज्ञानुसार अब विश्व कलियुग की प्रक्रिया से त्वरित हो रहा है, जहाँ भक्ति धार्मिक क्रिया पद्धति के उच्चतम रूप में विद्यमान है। बहुत से धर्म समूहों की ऐसी मान्यता है कि मानस ने वेदों का स्थान ले लिया है, साथ ही मानस की प्रशंसा भक्तिमय ग्रंथ में होती है जो कि आज के समय के लिए श्रुति के रूप में वर्णित की गई है। पृष्ठ 253.